ISSN: 2582-7162
लेख

सोशल मीडिया और नैतिकता पर एक अध्ययन

डॉ. अनिता वर्मा

*एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, महिला विद्यालय पी.जी. कालेज, लखनऊ।

Corresponding Author:

डॉ. अनिता वर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, महिला विद्यालय पी.जी. कालेज, लखनऊ

Email: aniverma228@gmail.com

Received 2022 June 15, Modification 2022 June 18, Accepted 2022 June 22, Published - 2022 July 07

सोशल मीडिया एक महान सामाजिक नेटवर्क उपकरण के रूप में माना जाता है। आज का युग सोशल मीडिया का है। टेक्नोलॉजी के इस बढते विकास में सोशल मीडिया का समाज पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा है। नई सदी के मीडिया विस्फोटक के दौर में पूरे विश्व की सूचना एक छोर से दूसरे छोर तक त्वरित गति से पहुॅचती हो तो ऐसे में सोशल मीडिया के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। परन्तु इस सबका अन्य पहलू यह है कि सोशल मीडिया से जुड़ कर अनैतिक आचरण और साइबर अपराध को काफी बढ़ावा मिला है। मानवीय एवं नैतिक मूल्यों के हनन भी उसी तीव्रता के साथ हो रहा है। घर परिवार समाज में संस्कार खत्म होते दिख रहे है। सोशल मीडिया का क्रेज समाज के हर वर्ग में देखने को मिलता है लेकिन इसके पीछे की नैतिकता से अधिकांश अनभिज्ञ है। नई पीढ़ी इसके आगे नातेदारी और रिश्तों के संबंधों की गर्मी को महसूस नहीं करती। इन साधनों का दुरूपयोग समाज को नैतिक पतन की ओर ले जा रहा है। हम अपने संस्कार और मूल्यों के दृष्टिकोण से विश्व के सबसे धनी देशों में जाने जाते है, अब उसी पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है। इसलिये प्रस्तुत विषय शोचनीय है, जिस पर ध्यान केन्द्रित करना और अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है। इस विषय पर एक श्लोगन–
'हमें दुनिया से जुड़ना है,
अपनों से दूर नहीं होना है।'

संकेत शब्द – नैतिकता, सोशल मीडिया, सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव, सुझाव

प्रस्तावना :– नैतिकता का प्रार्दुभाव तो लगभग मानव की चेतनावस्था से ही है। विश्व में जो कुछ भी सत्य, शिव और सुन्दर है, उसकी ओर उन्मुख कराने का श्रेय धर्म और नैतिकता को है। चरक मुनि का विश्वास था कि प्रारंभ में व्यक्ति गुणवान थे क्योंकि वे नैतिक मूल्यों में विश्वास रखते थे, पर जैसे–जैसे नैतिक मूल्यों में विश्वास खोते गये उनमे लालच, ईर्श्या, झूठ आदि का बाहुल्य हो गया और इस प्रकार वे नैतिक रूप से पतित हो गये। वर्तमान समाज विषमताओं और विऋखंलताओं का एक पुंज है। यह असंतुलित स्थिति क्यों है ? क्या मानस का स्वरूप बदल गया अथवा प्रकृति के सार्वभौमिक व्यवहार ने करवट लेली है। पहले भौतिकता, फिर जब से सोशल मीडिया की शुरूआत 1997 में हुई, तब से बहुत ज्यादा व्यवहार में नैतिकता का अभाव दिख रहा है।

सामान्यत नैतिकता द्वारा हमें कर्तव्य–अकर्तव्य, उचित–अनुचित का बोध होता है। कोई भी समाज इन नैतिक एवं आध्यत्मिक मूल्यों के अभाव में न तो उन्नति कर सकता है और न स्थायित्व पा सकता है। इसी लिये वर्तमान में वैज्ञानिक तकनीकी उपलब्धियों, भौतिक सम्पन्नताओं और बौद्विक विलक्षणताओं की उच्चतम चोटियों को छूने की ओर अग्रसर है, पर इन अप्रत्याशित उपलब्धियों के बाद भी आज का मानव अपने को पहले से कहीं अधिक अकेला, असहाय अनुभव कर रहा है। जीवन की ये उपलब्धियाँ जितनी उॅची उठती दिखाई देती है, उतना ही मन में यह डर भी बढ़ता जा रहा है कि कहीं हम एकाकी पन और रिक्तता की स्थिति में न पहुॅच जाये। क्योंकि विकास के क्रम में हमारी संवदेनशीलता भी उसी अनुपात में बढती गई और भय को व्यक्ति प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अनेक प्रकार के विद्रोह आंदोलन और समाज विरोधी कार्यो में प्रकट करने लगा है। ऐसा प्रतीत होता है भौतिकता के साथ–साथ सोशल मीड़िया हम पर इतनी हावी न हो जाये कि हम मात्र मशीनीकृत प्राणी बनकर रह जाये और सभी मूल्यों, आदर्शो का विध्वंशकर डाले। इसलिये हम सोचने को बाध्य हो जाते है कि आखिर हमारे जीवन में कमी है तो कहॉ और उसे किस प्रकार दूर किया जा सकता है। इस प्रश्न पर गंभीरता पूर्वक विचार करने से लगता है कि वर्तमान में सोशल मीडिया ने अपनी बात कहने का एक बहुत अच्छा मंच दिया गया है। यह संसार के विभिन्न कोने में बैठे लोगों से संवाद का महत्वूपर्ण माध्यम है। आज इसने हमारी जीवन शैली ही बदल दी है। लोगों का सोशल मीडिया के प्रति जुड़ाव को देखते हुये यह कहा जा सकता है कि यह माध्यम सोशल डिस्टेसिंग को बढावा देता है, नैतिक और आध्यत्मिक मूल्यों को नही। जबकि सोशल मीडिया एक बेहतर उपकरण के रूप में नैतिकता के विकास के लिये रचनात्मक भूमिका भी निभा सकता है और मानवीय मूल्यों युक्त एक समाज का निर्माण कर सकता है।

साहित्य पुनरावलोकन

चयनित शोध–पत्र के किन–किन अंशों पर कितना और क्या–क्या कार्य हो चुका है, इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिये साहित्य पुनरावलोकन की समीक्षा जरूरी है। पूर्ववर्ती शोध साहित्य में प्रस्तुत विषय से संबंधित अनेक कार्य किये गये है, जिनमें से कुछ का उल्लेख निम्न हैः–

1. डॉ0 सुबोध कुमार (2015) ने अपने शोध आलेख "सोशल मीडिया में मूल्य परक शिक्षाः अवसर और चुनौतियां" पर अध्ययनोपरांत यह स्पष्ट किया कि जिस प्रकार समाज में मानव का अमानवीय व्यवहार दिन–प्रतिदिन बढता जा रहा है, उसके लिये सोशल मीडिया के जरिये मूल्य परक शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिये।
2. डॉ0 मुकुल श्रीवास्तव एवं सुरेन्द्र कुमार (2017) शोध आलेख 'सोशल मीडिया और युवा विकास' मीडिया मीमांसा के अध्ययन द्वारा यह पाया कि सोशल नेटवर्किंग साइट युवाओं से संबंधित विकास के लिये बेहतर सुविधा प्रदान करते है। सोशल मीडिया सूचनाओं का सागर है, जो युवाओं के विकास से जुड़ी जानकारियों व प्रतिक्रियाओं से लैस है।
3. नरीपेन्द्र (2021) द्वारा लिखित "सोशल मीडिया का रिश्तों पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव" में शोधकर्ता ने इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनो पहलुओं की चर्चा की है। साथ ही सोशल मीडिया के साथ रिश्तों को संतुलित रखने के कुछ टिप्स भी बताये है।

शोध पत्र के उद्देश्य

- सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
- सोशल मीडिया का नैतिकता पर पड़ने वाला दुष्प्रभावों से जागरूक करना।
- सोशल मीड़िया के सदुपयोग के सुझाव देना।

नैतिकता और सोशल मीडिया

नैतिकता मानवीय व्यवहार का निर्देशक है, जो मानव के प्रति किये गये कार्यो की मीमांसा करता है। हम लोग प्रायः इसका प्रयोग एक समाज की आचरण संहिता के संदर्भ में करते है। सामान्यतः नैतिकता के द्वारा हमें कर्तव्य उचित–अनुचित का बोध होता है। उचित को नैतिकता का आधार भूत प्रत्यय माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त स्वातंत्रय कार्य अथवा स्वेच्छा से कार्य करने की क्षमता नैतिकता का मूल आधार है। नैतिकता का अर्थ स्पष्ट करते हुये गॉधी जी ने लिखा हैं कि सच्ची नैतिकता परम्परागत मार्ग का अनुसरण करने में नहीं अपितु स्वयं अपने लिये सत्य का मार्ग खोजने और निर्भय होकर उसकी ओर अग्रसर होने में है। उन्होने यह भी कहा कि कर्तव्य चेतना से प्रेरित कर्म ही वास्तव में नैतिक है। अरविन्द घोश के अनुसार मानव चरित्र के सर्वमान्य गुणों को अपनाना ही नैतिकता है। जब मनुष्य प्रलोभन और भय दोनो से मुक्त होकर केवल अपने कर्तव्य पालन के लिये कार्य करता है तभी उसे नैतिक माना जाता है। अतः मानवतायुक्त सद्गुणों का विकास ही नैतिकता है। नैतिकता को विस्तृत रूप में देखने पर पता चलता है कि नैतिकता का अर्थ मनुष्य की पूर्णता से है।

<u>सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव</u>

सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है, जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफार्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सअप) आदि का उपयोग कर पहुॅच बना सकता है। सोशल मीडिया का समाज पर सकारात्मक प्रभाव के कुछ बिन्दु–

- संपर्क और संबंध–संसार के किसी कोने में रह रहे मित्र/रिश्तेदारों को आपस में जोड़े रखता है।
- सकारात्मक प्रेरणा–सोशल मीडिया "सहकर्मी प्रेरणा" का सृजन कर सकते है और युवाओं को नई एवं स्वस्थ आदतें विकसित करने में प्रेरित कर सकते हैं।
- डिजिटल सक्रियता और सामाजिक परिवर्तन–सोशल मीडिया समुदाय के अंदर प्रभाव उत्पन्न करने का माध्यम बन सकता है और पूरे विश्व को आवश्यक विषयों से अवगत करा कर सामाजिक परिवर्तन भी कर सकते है।
- रिश्ते को मजबूत करेंः सोशल मीडिया रिश्ते को मजबूत बनाये रखने में भी सहायक हो सकता है। यहॉ बिछुड़े लोग एक–दूसरे से जुडे जाते है और अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते है। देश के किसी कोने मे बैठे हम अपने परिवार के सदस्य या मित्र से घनिष्ठता बढ़ा सकते है।
- सामाजिक संस्था के बारे में जागरूकता हेतु किसी भी सामाजिक समस्या जैसे प्रस्तुत समस्या सोशल मीडिया के जरिये लोगों के व्यवहार में नैतिक मूल्यों का समावेश के लिये प्रयास किया जा सकता है। इसी तरह किसी भी सामाजिक समस्या के प्रति इस मंच से लोगों को जागरूक किया जा सकता है।

इसी तरह सोशल मीडिया अनेक सामाजिक विकास में अपना योगदान दे सकता है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया, शैक्षिक, व्यावसयिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, मनोरंजन आदि सभी क्षेत्रों में हमारे जीवन से जुड़ चुका है। आजकल सोशल मीडिया बच्चों और अध्यापकों को ज्यादा ही पसंद आ रहा है, क्योंकि अध्यापक अपनी जानकारी घर बैठे ही सोशल मीडिया के माध्यम से बच्चों तक आसानी से पहुॅचा सकते है। आज इसके बिना हमें अपने को असहाय समझते है। आज स्थिति यह हो गई है कि थोड़ी देर के लिये इंटरनेट चला जाता है तो हमारे सारे काम ठप हो जाते है। यानि यह हमारी जिन्दगी का अहम हिस्सा बन चुका है।

सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव

हम सभी यह मानते है कि सोशल मीडिया पारस्परिक जुड़ाव का एक अच्छा साधन है। पर सोशल मीडिया का अत्याधिक प्रयोग के परिणाम स्वरूप वास्तविक दुनिया की गतिविधियों के लिये कम समय मिल पाता है, इसलिये विचार करने पर यह स्पष्ट है कि हम वास्तविक रिश्तों को खोते जा रहे हैं। एक ही छत के नीचे रहने वाले लोगों का व्हाट्सअप पर 'गुडमार्निंग' का संदेश भेजते है पर पास में दिखने पर अपनी व्यस्तताओं में उन्हें नजरअंदाज करते है और बातचीत की जरूरत महसूस नहीं करते। यह पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को नैतिक पतन की ओर ले जा रहा हैं। वर्तमान में हमारे वास्तविक मित्रों की तुलना में अप्रत्यक्ष मित्रों की संख्या बहुत अधिक है, पर ये रिश्ते अंदर से खोखले है। हमारे घरों से संस्कार गायब हो रहे है और हम इस अंधी दौड़ में शामिल होकर अपने मूल्यों को भूलते जा रहे है। वास्तविकता के धरातल से हटकर सोशल मीडिया ने हमें कहीं न कहीं अवास्तविक जीवन शैली की तरफ मोड़ दिया है। जिससे हम उचित–अनुचित, कर्तव्य–अकर्तव्य का अंतर नहीं कर पा रहे हैं।सोशल अंकाउट वास्तविक जीवन से अधिक महत्वूपर्ण लगने लगा है। इसलिये हम अपने माता–पिता, भाई–बहन के साथ समय व्यतीत करने की जगह सोशल मीडिया के साइट्स पर समय देना ज्यादा पसंद करते है।

सरकार द्वारा पहलः– सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद सोशल मीडिया के अनैतिक प्रयोग पर लगाम नहीं लग पा रहा है। इसके लिये भारत सरकार ने साइबर सुरक्षा नीति और सूचना तकनीक कानून भी बनाया है। लेकिन इस कानून के क्रियान्वन में समस्यायें आने की वजह से सोशल मीडिया पर अफवाहों को रोकने/अनैतिक प्रयोग में कामयाबी नहीं मिल पा रही है।

सरकारी प्रयास के कुछ बिन्दुः

- हाल ही में केन्द्र सरकार ने सूचना तकनीक कानून की धारा 79 में संशोधन का मसौदा तैयार किया है। इसके तहत फेसबुक और गूगल जैसी कंपनियॉ अब अपनी जिम्मेदारी से नहीं भाग सकेगी। साथ ही नए दिशा निर्देश जारी करने की तैयारी है। इसके तहत आई0टी0 कंपनियॉ फेक न्यूज की शिकायतों पर न केवल अदालत और सरकारी संस्थाओं बल्कि आम जनता के प्रति भी जबावदेह होगी।
- इसके अलावा गृह मंत्रालय ने राज्य पुलिस बलों और खुफिया ब्यूरों को इस पर एक्शन लेने के लिये सोशल यूनिट्स बनाने के निर्देश दिये है।
- इसके अलावा सोशल मीडिया इंटेलीजेंसी के द्वारा सोशल मीडिया गतिविधियों का विश्लेषण करते रहना और शिकायत पर उचित कार्यवाही भी होनी चाहिये।
- सोशल मीडिया का दुरूपयोग देखते हुये उसके बारे में जागरूक करने के लिये यू0जी0सी0 ने भी युवाओं को नैतिकता और शिष्टाचार सीखाने के लिये पाठ्यक्रम का हिस्सा बना दिया है। वर्तमान में (NEP 2020) ने भी स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में सोशल/मास मीडिया के नैतिक मूल्यों को स्थान दिया है।

निष्कर्ष :– सोशल मीडिया के इन नकारात्मक प्रभावों को समय पर नहीं पहचाना और निंयत्रित किया गया तो यह मानव के सामाजिक कल्याण के लिये जोखिम भरा हो सकता है।सोशल मीडिया के साइट्स में शामिल होने से पहले ध्यान से उसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं की जॉच कर लेनी चाहिए। लोगों को यह समझना आवश्यक है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स आभासी दुनिया बनाती है जो वास्तविकता से बिल्कुल अलग है।

वर्तमान में वैज्ञानिक तकनीकी उपलब्धियों, भौतिक सम्पन्नताओं और बौद्विक विलक्षणताओं के बीच भी हम अपने को असहाय, अकेला महसूस कर रहे है, क्योंकि ये आभासी दुनिया अंदर से खोखली है, इसमें प्रायः मानवीय नैतिक, आध्यत्मिक मूल्यों का अभाव है। इसलिये सोशल मीडिया को हम अपने पर हावी न होने दें। क्योंकि सोशल मीडिया की भूमिका सामाजिक समरसता को बिगाडने और सकारात्मक सोच की जगह समाज को बॉटने वाली सोच को बढावा देने वाली हो गई है। यदि उसका सही तरीके से सीमित प्रयोग किया जाये तो यह मानव जाति के लिये वरदान साबित हो सकती है।

सुझावः:– वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है। निसंदेह सोशल मीडिया विकास के लिये आवश्यक है पर इसका प्रयोग समझदारी के साथ एक सीमा में करना होगा। इसके अतिरिक्त इन आदतो ंको हावी न होने दे जैसे–इंटरनेट की लत, बार–बार मोबाईल चेक करना, हमेशा आनलाईन रहने की लत, उसके बिना अकेलापन महसूस करना, सोशल मीडिया पर सभी को व्यक्तिगत जानकारी देना, अनजान लोगो को दोस्त बनाना, व्यक्तिगत फोटो शेयर करना, आत्मनियत्रंण खोना आदि। उन्हें हमें यह भी बताना है कि वे सोशल मीडिया का प्रयोग संयम, गोपनीयता, समय सीमा आदि का पालन करते हुये करें। वर्तमान में मानवीय मूल्यों के विकास हेतु सोशल मीडिया का ही सहारा लिया जा सकता है। जैसे सोशल मीडिया के विभिन्न साइट्स के जरिये पहल की जाये तो लोगों के व्यवहार में नैतिक मूल्यों का समावेश किया जा सकता है। साथ ही इस क्षेत्र में कार्य कर रहे संस्थानों को भी इस तकनीकी से जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिये, जिससे मानवीय मूल्यों को विकसित करने में सोशल मीडिया एक बेहतर उपकरण के रूप में कार्य कर सकता है।

इस मंच के जरिये समाज में नैतिक मूल्यो का जीवन में समावेश करके समाज में बदलाव की बयार लायी जा सकती है। सोशल मीडिया नैतिकता के विकास के लिये सकारात्मक एवं रचनात्मक भूमिका निभा सकता है और एक मानवीय मूल्यों युक्त समाज का निर्माण कर सकता है। भारत को जर्मनी जैसे उस कठोर कानून की जरूरत है जो सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक सामग्री का इस्तेमाल करने वालों पर शिकंजा कसने के लिये बनाया गया है।

संदर्भ सूची

- www.abplive.com
- www.drishtias.com
- Ijcrt.org
- www.jru.in
- www.mcu.ac.in
- www.momjunction.com
- www.worldwidejournals.com
- सूरती उर्वशी (1974), नैतिक शिक्षा और बाल विकास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
- lyer, Raghvan (1973) the moral and political thought of Mahatma Gandhi, Oxford University press, Delhi
- Niblet, W.R. (1963) Moral education in a changing society, oxford university press, Delhi.